सर्वदेवप्रतिष्ठा

१-१४

यह ग्रन्थ चिरंजी [illegible] सा
कर्मा लिखा है ॥

॥ श्रीधन्नाराम [illegible] प्रति ॥

[illegible] प्रतिष्ठा विधि प्रारम्भः ॥

॥ श्रीकृष्णदास स्वदम्

राम [illegible] कृत प्रतिष्ठा सं

ग्रह के अनुसार [illegible]

[illegible] वाले की प्रति

[illegible] के ग्रन्थ [illegible]

[illegible] है

संवत् १९७२ फा० कृ

२ [illegible] वार को

पत्र १[illegible]

सर्वदेवप्रतिष्ठा

प. सं. १ - १८

२

॥ १ ॥

नारदपञ्चरात्रप्रकृतिमे जलाधिवासार्थं मंडपे चतुरस्रं मध्ये चतुरस्रां वेदिकां कुं॰ जलाधिवास के वास्ते सर्वतोभद्रमंडल से उत्तर की तरफ याप्रू वृ की तरफ चतुरस्र वेदी करनी ५ कोने चारों कोणे पर

याग मंडप मे वायु के कोने में लिखी

यागमण्डप निर्माणम्॥ भगवन्मन्दिरादुत्तरे कोणे षोडशहस्तं संख्याकं चतुरस्रं वा त्रिंशाकार मंडपं तत्रा चतुर्द्वारसमन्वितं चतुर्भिस्तोरणै पताकाध्वजतोरणोपेतं षोडश स्तंभयुतां कुं॰॥ यागमण्डप॰ भगवान् या शिव के मंदिर से उत्तर की तरफ यागमंडप करना षोडश हस्त का षोडश स्तंभ की धाधा टोर चारों तरफ गाडसे॥ चार दरवाजे करने चारों दरवाजों पर वा दसी स्तंभ के लाल गारे ने ८ के लाल गादने दरबाजों पर वंदरवाल चारों तरफ बांधने और ऊडी धार रईस मांत लगावनी ४ चारों दरवाजों पर ८ और एक एक कोणों पर लगावनी पीतरक हरित ६ पीत ६ हरित ६ रक्त इस प्रकार करनी॥ मध्यमे सर्वतोभद्रम्॥ ईशाने नवग्रह मंडपम्॥ आग्नेयकोणे लिङ्गतोभद्रम्॥ नैर्ऋते वास्तुमण्डलम्॥ वायव्ये ... मंडलम्॥ इस प्रकार करने॥ सर्वतोभद्र से पश्चिम की तरफ चतुरस्र कुण्ड करना॥ उत्तर मे वर्तुलाकार करना तीन तरफ चतुरस्र कुण्ड करना॥ यह प्रकार याग मंडल का नारदपञ्चरात्र विनपेडी के॥ यह प्रकार यागमंडल का नारदपञ्चरात्र वि॥ धान्याधिवास का प्रकार वी नारद विधि मे सो लिखा है॥ नारदपञ्चरात्र प्रकृति मे पञ्च प्रकृति मे लिखे है॥ दक्षिणे धन राशि॥ पश्चिमे कुण्ड पूर्व मे चतुरस्र करना॥ यह प्रकार लिखे है॥ विशेष प्रतुलाकार॥ उत्तर मे त्रिकोण पश्चिम मे उत्तर मे योग मे ४ करने अग्नि मे कुण्ड करने॥

जलाधिवास ... कुंड के ऊपर जलाधिवास को ... कर देना।

पाप न करे ... मध्य मे वेदी ... पर जाकर ... चतुरस्र सौ को बरावर हो

॥ १ ॥

२ प्रतिष्ठादिनतः पूर्वं ए

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सर्वदेवप्रतिष्ठासंग्रहस्य विषया
नुक्रमणिका ॥ तत्रादौ [illegible] एकविं
शतिदिनात्प्राक् नांदीमुखश्राद्धं कर्तव्यम् ॥ प्र
माणं च श्राद्धविवेके ॥ एकविंशत्यहः यज्ञे विवा
हे दशवासराः त्रिषट् चौलोपनयने नान्दीश्रा
द्धं विधीयते ॥ अत्र इष्टापूर्त्तयज्ञे एकविंशतिदि
ने नांदीमुखं कर्तव्यमित्युक्तम् प्रतिष्ठामुहूर्तदि
पूर्वं नतः [illegible] ॥ अथवा ॥ (प्रतिष्ठादिनतः) त्रयोदशदिनपूर्वं कर्मारंभः का
र्यः ॥ तदित्थम् ॥ प्रथमदिने आदौ कलशस्थापन
म् ॥ आचार्यब्राह्मणो वरणम् ॥ ततः षोडशमा
तृकपूजा नान्दीश्राद्धं च ॥ इति प्रथमदिनकृ
त्यम् ॥ द्वितीयदिने ब्राह्मणानां वरणम् ॥
श्रीनारायणशिववासुब्रह्मगायत्रीसर्वमन्त्रं
जपमन्त्राणां जपकरणार्थं ॥ तृतीयदिने
मण्डपनिर्माणम् भूमिशोधनं सर्वतोभद्रा

२

नवमदिने बलिप्रदानम् सूत्रेण मन्दिरवे

३

ष्टनम् ~~...विधि...~~

शय्याधिवासपर्य्यन्तं कर्म्म कु० ॥ दशमदि
ने हवनम् कु० बलिप्रदानं च कोप्यम् ॥ मन्दि
दपि कूपारामप्रतिष्ठादिकमपि तत्रैव दि
ने कर्तव्यम् ॥ स्तम्भरोपणं कार्य्यम् ॥ उत्सर्ज
पद्धत्यानुसारतः लम्बोदरीपद्धत्यानुसारतः
कूपारामादिप्रतिष्ठा कार्य्या ॥ एकादशदि
ने विधिसंचारमुपवासं जागरणं च का
र्य्यम् ॥ द्वादशदिने प्रथमं पुरोहिताय श
य्यादानं गोदानं च दत्वा पूर्णाहुतिं च दत्त्वा
यजमानस्याभिषेचनं च कृत्वा तिलकं आ
शीर्वादं च कृत्वा तदनन्तरं भगवन्तं म
न्दिरे स्थापयित्वा प्राणप्रतिष्ठां कु० ॥ ततः
प्रसाद भोजनादिकं दत्त्वा पुनः स्नानं पंचगव्यं

द्यौ मण्डपं कर स्पर्शं कुर्यात् निर्माणं मंत्रका

प्यम्॥ यागमण्डपं निर्माणं त्वा पिकत्विम्॥

चतुर्थपञ्चमदिने सर्वतोभद्रादिरचना

कार्या:॥ षष्ठदिने सर्वतोभद्रादि मण्डपूप

जाकार्या:॥ सप्तमदिने प्रकुंरारोपणाय

ब्रवोणेवीजं धरिशाधना दारे च जलाधि

वासपर्यन्तं कर्मकुं०॥ अष्टमदिने धान्या

धिवास पर्यन्तकर्म कुं० तत्र शतभार प

रिमित धान्यराशिं कृत्वा तदुपरि कुशाना

स्तीर्य तदुपरि व्याघ्रचर्म दत्वा तदुपरि षट्पद्म

पां कृत्वा तदुपरि भगवन्तं शाययित्वा कौशे

य वस्त्रेण छादयेत्॥ भा० का १५० डेढ सो मण कच्चे

अन्न के शतभार होते हैं। सो जो शतभार की सामर्थ्य

न हो तो २५ मण के ७ ले स्थल वा छिलके प न

धान्याधिवास के वास्ते देना चाहिये॥ धान्याधिवास॥

सुवर्णभूमि के ऊपर भगवान को स्थापन करके दुशाला ऊपर

धान्याधिवास के मन्त्र ... के ? देर लगा दे ने तिस के ऊपर ... दुशाला ... | पत्र २०८ ... तिन्नों में की सो पर स्नान विधि कर ... का फेर

(Left margin notes:) प्रतिमा प्रकार मे स्नान विधि कर के पेरधा न्याधिवा सात्ति० है" पो ... धान्याधिवास पत्र ... सर्वतोभद्र ... तिसना ... और धूपारोप ... विधि: और ... प्रतिष्ठा ... नवदेव ... तैलस्थ ... बीजनाम प्रतिमांक ...

(Right margin notes:) धान्या धिवा सात्कृ रण ० | प्रतिष्ठा मयूखमे पत्र २०८ पर | प्रति ष्ठाप्र काशमे पत्र ... धान्या धिवा सात्ति० है" ० | नारद पंचरात्र पद्धति मे प० १२ से १५ तक धान्याधिवा

३

रंभ हुआ है पत्र २८ से ३१ तक समाप्त होगई कि
ल प्रतिष्ठा ॥ फेर ३१ से प्रारंभ हुआ वाच
न का प्रारंभ हुवा पत्र ४० तक समाप्त ॥ पत्र
४० से षोडशमात्रका पूजन का प्रारंभ हुवा
पत्र ४१ तक समाप्त हुवा ॥ फेर पत्र ६८ से
चतुःषष्ठी योगिनी पूजन देवता पाल पूज
न हवन प्रारंभ हुवा है पत्र १०० पर समाप्त
पत्र ६१ पर प्रथम अग्नि का पंचभू संस्कार
करके कुशकण्डि करके अग्नि की स्थापना
करके पत्र ६४ से वास्तु मंडल पूजा
र करके फेर नवग्रह पूजा कर योगिनी
र करके फेर सर्वतोभद्र पूजा
दि पूजा कर के पश्चात सर्वतोभद्र पूजन
न पत्र २०१ से करा वे राग पत्र ११३ तक
य हवन प्रति ष्ठा संग्रह में भर व्याति है
पत्र ६१ पर इसी प्रतिष्ठा संग्रह में यह वेदी के
प्रतिष्ठा है वो प्रथम सर्वतोभद्र मंडल लेखा
भर लिखा है वो प्रथम सर्वतोभद्र मंडल लिखा

पत्र ६४ से वा स्तु मंड ल पूजन प्रारंभ हुवा है पत्र १०७ तक समाप्त हो गया

पत्र २८ पर पुरुष कुदृष्टि ने हाथ के रक्षा बांधनी स्त्री के वाम हाथ कर चावल धानि पहम माला वा कली लिखि है

३

ओंकार के पश्चात् अग्निस्थापन कुशकण्डिका आदि क
र्म को करके पश्चात् वास्तुमंडल देवतानां पूजन
तदनन्तर अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित ग्र
हादि पूजनं ॥ तदनन्तर योगिनी क्षे
त्रपालादि पूजनम् ॥ कर्तव्यं करना यह क्रम
भी लिखा है ॥ दोनो क्रम सत्य है ॥ दोनो मे से
एक को करलेना ॥ पत्र ६१ से कुश कण्डिका प्रा
रम्भ हुवा है हवनकी प्रारम्भ हुवा है ॥ पत्र ११३
पर से लि ॐ तो भद्रमण्डल का पूजन प्रार
म्भ हुवा पत्र १३० ॥ कुश समाप्त हो गया ॥ पश्चा
त् पत्र १३० से भूमि पूजन ध्वजा तोरण पताका
त्रिपताका पूजन प्रारम्भ पत्र १४४ पर वी षोडश
सांग पूजन लिखा है पत्र १६० पर वी ध्वजा तोरण
सांग पूजन लि० है ॥ यह साम पूजन मंडपादि को
णा पूजन लि० है ॥ दिन सम कोस यह
के करा कर के षष्ठ दिन पंचमे दिन पत्र नारद पत्र में रात्रे पि
करा कर के सातवें दिन पर से पवकोणे का
डपति के ६६ पर से ॐ ...

शय्याधिवासन प्रासादोत्सर्ग पद्धति [illegible] मन्दिर से [illegible] 9वें दिन करना

5

हवन करके भगवान को शय्याधिवास करावे
स्नान वे 9वें दिन शय्याधिवास पर्यन्त देव
पूजन करना करना ॥ इस ग्रंथ मे प्रतिष्ठा
संग्रह मे पत्र २०८ पर शय्याधिवासादि
शय्याधिवासपर्यन्त कर्म 9वें दिन में क
खा है ॥ हवन बलि प्रदानादि कर्म कर
रना ॥ दशवें दिन हवन प्रासादि
मे इस ग्रंथ मे पत्र २२२ पर
स्नान यह सम कुस लि० है ॥ उसी दशवें दि
न को उत्सर्ग पद्धति के अनुसार और लक्ष्मी
नारायण कृपाराम
दरी के अनुसार और जो हमारे अनुसार से प्र
तिष्ठा की कापी है उसके [illegible] दूसरी रीति से 10वें दि
न आराम प्रतिष्ठा भी जो मंदिर मे कूप हो आराम हो
न करा देनी 10 दशवें दिन करा देना ॥ प
वय यह समझना
भात एकादशवें दिन 11वें दिन विधि संचार व
रना उसी दिन उपवास करना रात्रि को जा

शय्याको उपरमूर्ति न्यास विधि सम काल शरीर से न्यास करना

5

तीं नौवे
दीवोंपर
स्नान क
रा कर को
फेर रात्रि
को धा
न्याधिवा
स करा
देना ॥

धान्याधि
वास कीय
ह विधि
है २५म
ण कच्चे
अन्न के
का जितना
सामर्थ्य
हो उतना

अन्न ले
कर के
उसमें भ
न के ९
ढेर लगा
वे
उ... के
समके

कां करने चाहिये जो ईतना न बरे तो दो २ वेदी
कातरते बी कर तेनी भगवान को एव की २
चौकी २ पटडे २ वस्त्र बेरा भी बीडे कडे पहई
स प्रकार कर के बी स्नपन विधि कर देना ईस
प्रकार सप्तम दिन को स्नान विधि समाप्त कर के
जलाधिवास कर के पत्र २०६ पर जला
धिवास देवस्नपन विधि समाप्त हुई है ॥ अ
व पत्र २०६ पर जलाधिवास सप्तम दिन को
समाप्त करके फेर पश्चात् अष्टम दिन ८ वे
दिन धान्याधिवास विधि को करना पत्र २०६
पर से धान्याधिवास का प्रारम्भ हुवा है धा
न्याधिवास के उपर से [illegible] भगवान को उठा
य कर के उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द ईस श्लोक
से फेर भगवान को चौकी के पर पंचामृत से औ
र शुद्धोदक गंगा जल से स्नान करा देना ॥ स्ना
न करा कर के [illegible] उसी दिन ८ वे नवम दिन को
वाहि[illegible] दन कर के पीत [illegible]

वाड्याको नि (अरद ३ ६ — वास्तु मंडप प्रतिष्ठा प्रकाश ...
नी मंडप प्र॰ प्रका॰
मे पत्र ३ पर है

॥ ६ ॥

लिंगतोभद्र मंडल प्रतिष्ठा प्रकाश मे पत्र ८ पर है

गतोभद्र करण ॥ नैऋत मे वास्तु मंडप करण ॥
वायव्य मे योगिनी मंडप करणे ॥ इस प्रकार से
महे ॥ अब सर्वतोभद्र की रचना के वास्ते जमीन
पर ४ इंटो के लगाकर के जमीन पर से फर स्थ
सरी पैडी का निसान लगाना वो ४ अरद का चौ
नि १ वलांद उचाई होकर के फर तीसरी पैडी
कानिसान इसी तरह १ वलांद उचाई पर करके
उपर की पटडी र दो हाथ की चौडी लम्बी रहेगी
और १ हाथ की लम्बी चौडी वास्तु को ॥ और लिं
गतोभद्र की होनि चाहिये उपर की ॥ १ एक पैडी
४ अरद की ॥ फेर दुसरी ४ अरद की ॥ फेर ती
सरी ४ अरद की ॥ एक एक वलांद की उंची होगी
वास्तु मंडप और लिंगतोभद्र मंडप की जमी
न १ गज जमीन के होनी चाहिये लम्बी चौडी
१ गज की उंची रहे ॥ उपर की पटडी १ हा
थ की लम्बी चौडी रहेगी यह क्रम है ॥ सर्वतो
...

6

३ अंगुल की पैडी करनी तीन तीन अंगुल की उकरनी

॥ ६ ॥

... की वी ३ पैडी करनी ३ अंग ... ४ अंगुल उंची

जारण करना॥ फेर अगले १२वें दिन प्र
तिष्ठित को शय्यादान गोदान देना इस ग्र
न्थमे प्रतिष्ठासंग्रहमे पत्र २३२ पर पूर्ण
हुती पत्र २२६ पर से पूर्णाहुती अभिषेक
आशीर्वाद तिलक॥ प्राणप्रतिष्ठा पत्र २२०
पर पत्र २३० पत्र २२६ से इस समकर्मो का
प्रारंभ हो करके फेर पत्र २५६ पर सम
कर्म समाप्त हो गया है इस ग्रन्थमे॥
अथ सर्वतोभद्रादि मण्डलानि प्रारम्भ॥ अब सर्व
तोभद्र वा रुद्रमंडप लिंगतोभद्र मण्डपकी विसारी से
बणाववनेका प्रकार लिखते है॥ मध्य मे प्रतिष्ठा क
रावणेकेवासे यागमंडप की भूमि जमीन १६ हाथकी
लम्बी चौडी होनि चाहिये उस के चारो तरफ १६
थंभ कडी पांत गावनी गाड णी चाहिये उन के थोरे
थोरे को कनात तणां णी इनी मध्यमे सर्वतोभद्र करना
ईशानमे नवग्रह मंडप करना॥ प्राजेयको ग्रामेति

पत्र २३१ पर बिप्रियं चार विधि ना संचार लि. है ३

सर्वतोभद्र मंडल प्रति ष्ठा प्रकार है पत्र १७ है

नवग्रहों का मंडप प्रतिष्ठा प्रकाश मे

जिस वक्त जिस ग्राम वा स्थान प्रतिष्ठा करनी हो उस ग्राम जाने से उस समय सर्वतो भद्रादिका मण्डल बनाकर पूजा से का थापन करना

१

पूर्वे कुण्डदक्षिण कुण्डयो योनिः उत्तराग्रा ॥ पश्चिमोत्तरयोस्तु पूर्वाग्रा ॥ इति योनिव्यवहारः ॥ अथ नाभिः ॥ सर्वेषां कुण्डानां मध्ये नाभिः पद्माकारा वा कुंड सदृशी ॥ हस्तमात्रे कुण्डे चतुरङ्गुलविस्तारा उच्छ्रुतद्वयोच्चा भवति ॥ इति कुंडरचना ॥ ६ कुण्ड विशेष अनुष्ठान में करने ॥ अनुष्ठान में दो कुण्ड करने वा १ कर लेना ॥ हवन में । प्रतिष्ठा हवन में वा हे चक्रके विचार लेना ॥ सो काती घिर्वार प्रतीत विन्दु वाक्य प्र. चिन्ता मणि का है ॥ रत्नी नाभ हे सामान्य का है ॥ प्रतिष्ठा प्रकाश ग्रन्थमें कुंड रचना प्रकार ॥ वेदि प्रकार पत्र पर लि० है ॥ पत्र २।३।४।५।६।७।८ पर सर्वतोभद्रादि सम मंडल वरोह वे हे ॥ कुंडकी सम वत लाड वे है ॥ और मंडलों की कुंडों कि

र चना प्रकार सम्पादित सभा लिख कर दीवे है ॥ कुंडरत्नावली और कुंड विंशति ग्रंथ में भी कुंडों की रचना प्रकार सविस्तर लि० है ॥

७

१

प्रतिष्ठाप्रकाश ... पत्र ५ पर ... चतुरस्र

अथ कुण्डनिर्माणविधिः॥ पश्चिमे वर्तुलाकारम्
उत्तरे चाग्निकोणकम्॥ मेखलाभिस्त्रिभिर्युतं
मुविस्तारायामनिम्नं हस्तमात्रं मेखलाश्च चतु
रङ्गुलम्॥ कुण्डस्य पश्चिमभागे योनिं अश्वत्थ
पत्र सदृशीं कुर्यात्॥ आयामे च पंचदशाङ्गुलम्॥ अ
[पीपलके पत्र समान ...] भाषा॥ सर्वतोभद्रमण्डप
तम्॥ द्वितीयप्रकारभाषा लाकार कुण्ड करना॥ उ
के पश्चिमभागमे वर्तुलाकार कुण्ड करना॥ उत्
तरभागमे कुण्ड त्रिकोण करना॥ लिखा है
हस्तमात्र के कुं घे करने तीन मेखला भागमें
तीन पैडी के करने॥
डाके करने॥ दोनो तीन तीन पैडी के विस्तार की
ऊंचे दोनो मे योनि १५ अङ्गुल के कुण्ड की ओरमें
अश्वत्थपत्र सदृश करनी॥ कुण्ड की ओरमें
अश्वत्थपत्र सदृश पैडी के करने॥ ३ तीन अङ्गुल
उपर की तीन तीन पैडी को करने तीनो पैडी करनी॥ यह की कुण्ड की
की चौडी पैडी करनी तीनो पैडी करनी॥ यह की कुण्ड की
का क्रम लि° है॥ और की प्रतिष्ठाप्रकाश मे क्रम लि°
है॥ पत्र ५ पर॥ एक कुण्ड पक्षे चतुरस्रं वा वर्तुलं
ज्ञालकुण्ड पश्चिमे वा उत्तरे विधेयं कार्य्यम्॥

प्रतिष्ठा प्रकाश ग्रंथा नुसार सर्वतो भद्र मंडल और कुंड करके लेने उ सहायता को देख देखके रके

मात्र तीन मेखला हस्त कुंड रचना ... मे बर्तुल ... त्रिकोण ... विस्तार मे ... करनी यह लि° है

८

और फेर मूर्तियों को प्राणप्रतिष्ठा कर सी भ
गवान को याग मंडप में से वाजे व जावते हुवे
पीनस में वठा कर के मंदिर में ले जाकर के
प्रथम सिंहासन पर भगवान को स्थापन क
र देना॥ शिव को जलहरी में स्थापन कर के
मिस्तरी से चुन्ने में जलहरी में जड़वा कर के
सम काम पहिले कर के फेर प्राण प्रतिष्ठा क
र के फेर स्नान पंचामृत से गंगा जल से कर
कर के तिलक लगा कर के तुलसी विल
पत्र चढ़ा कर के भोग लगा कर के फेर आ
रती कर देणी इतना काम १२वें दिन क
र देना। फेर १३वें दिन वा दो चार दिन पीछे
ब्राह्मण भोजन करा देना॥ १०० सवा १०८
वा ५० वा २० इतने ब्राह्मणों को भोजन देना चा
हिये॥ शुभमस्तु॥ यह का पी सर्व देव प्रतिष्ठा
संग्रह में लिखी है॥ रामलाल कृत प्रतिष्ठा सं०

४

वस्त्रम्
वाख्या
हिराकर
के ट

७ सप्तमे दिने ७ वें दिन प्रतिष्ठा संग्रह ग्रंथ में पत्र १९६
पर से जलाधिवास का प्रारंभ हुवा है॥ जल की कुंडी में भ
गवान को सप्तम ७ दिन की रात्रि को रख कर के, फेर अष्ट
म दिन को प्रातःकाल ३ वेदीयों पर स्नान करा कर के फेर
रात्रि को धान्याधिवास धान्य राशि पर भगवान को स्था
पन कर देना फेर नवम दिन को प्रातःकाल भगवान को
पंचामृत से गंगा जल से स्नान करा कर के शय्याधिवा
स करा देना भगवान को शय्या पर पधरा कर के दशाला उ
ढाय देना नवें ९ दिन रात्रि को शय्याधिवास याने शय्या के ऊ
पर भगवान को रखना॥ प्रतिष्ठा संग्रह में पत्र ३०८
पर शय्याधिवास कर्म है॥ ९ वें दिन करना॥ फेर १०
दशवें दिन हवन वास्तु प्रदान कर प्रासाद स्नान प
र कर्म करना यह कर्म पत्र २२२ पर है॥ यह सब कु
स्य है॥ अलग प्रतिष्ठा संग्रह के अनुसार और
प्रतिष्ठा प्रकाश के अनुसार और प्रतिष्ठा मयूख
फेर
के अनुसार भी प्रथम जलाधिवास धान्याधिवास फेर
शय्याधिवास लिखे है॥ फेर ११ वें दिन विधि संचार
करना और उपवास करना उस दिन रात्रि
को जागरण करना॥ फेर १२ वें दिन प्रभात
को शय्यादान और जो दान देणा

को लेप देना थापे पर ॥ फेर गंधादिक कर के पूजन
थापे का कर देना अर्घ्य तथा पाद देना ॥ फेर आ
चार्य ब्रह्मा का वरण करना ॥ यजमान जो है सो
अपनी स्त्री को दक्षिण भाग में बैठा कर के आचा
र्य ब्रह्मा का वरण करे ॥ डोरी का हाथ लेगी फे
ला न्याय ॥ पूर्वी ग्रमी प्रस्तो ... संकल्पै कु
अपवित्रो ति पढि के ॥ देश काल संकल्प के ॥
अमुक गोत्रो हं अमुक शर्मा हं यजमान हं कृ
कहि ब्रह्माण विधि प्रतिष्ठा जनित कर्म
करणार्थं ॥ अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मण
मेभि पूगी फल दातवा सो अमी आचार्यत्वे
न त्वाम हं वृणे ॥ वृतो स्मीति प्रति वचन
अश्रे तेन दोचा मो ... इति पठन ॥ ततो यज
मानो अंगुलिं बध्वा आचार्यं प्रार्थयेत् ॥ य
था स्वर्गे शक्रादीनां आचार्यो वा व हेस्प
तिः तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सु
व्रत इति आचार्य वरणम् ॥ अथ ब्रह्मा
वरणम् ॥ पूर्वोक्तं सर्वं पठित्वा प्रार्थनं

अथप्रयोगविधिलिख्यते॥ तत्रादौ प्रथमं नांदीमुखश्राद्धं॥ आषा॥ प्रथम १ पटडी पूर्वपश्चिम कतेर मे [illegible] धर मे स्थापन कर मी फेर उसपटडी पर १ खेतपट वधा देणा फेर उस के उपर २७ डंग के नाले कार्य धर णी॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥ पहले के मध्ये सब्जे भरे रखणी॥ फेर उस पर १ सपा रीकागणपती थापन कर के स्थापन करणा फेर १ कलश ईशान मे स्थापन करणा फेर १ दीपक घृत का प्रज्वलित कर आग्नेय नमे धरना॥ फेर स्वस्ति वाचन करना गणेशपूजन करना कलश [illegible] न करना॥ फेर षोडशमातृका पूजन करना॥ फेर चापपर पवाश्व घृत की धारा देनी॥ फेर १ नालडोरी को लेकर के उसधारा के ऊपर लगा देना इस पाशे आठ मे लपेट कर के नीचे

लालजी रामजी वाराणसी मातृका पूजन करना इसी वास्ते १२ दोका जी लिखि है

इतर सोंसें अपनी बंधन कराकर के फेर

पूर्वोक्त स्वस्तिवाचन गणपतिपूजन ब्राह्मण वरण पुण्याहवाचन कलशस्थापनादि देव मां हि करिष्ये ॥ ॥ तदुक्तं देवेन तन्त्रविधि परि समाप्ति पूर्वकं आदौ गणपत्यादिदेवान्यथोप चारैः प्रपूजयिष्ये ॥२॥ एवं प्रतिज्ञा संकल्पं कृत्वा ग्रहान्पूजयेत् ॥ गणेश ॥ ओंकार गौर्यादि षोडश मातृ ... कलश प्रतिष्ठा पूजन चतुःषष्ठी योगिनी पूजन सर्वपूजनादि यह सम पूजन प्रतिष्ठा संत्र ... संख्यानुसार कराकर के फेर ब्राह्मणों को जाप की ... डोरि का ... का वरण करणा ॥ अथ वरण संकल्पः ॥ ... अपवित्रेति पठित्वा देश कालं स्मृ तपूगीफलान्यादाय अमुक मासे ... वासरे ... अमुक गोत्रोऽहं अमुक ... सुख काम ईश्वर ... श्री सर्व फलावाप्त्यर्थं ... नारायण प्रीति कामो वा ... प्रतिष्ठा कर्मणि वा कूप प्रतिष्ठा कर्मणि वा शिव प्रतिष्ठा कर्मणि ... सिद्ध्यर्थं देव कलप्राप्ति कामः ... अमुक ... अमुक ... श्री ब्रह्म गायत्री मंत्रस्य तथा च ... मंत्रस्य सपाद ... चतुर्लक्ष संख्याक जपं कारयितुं एभिः ...

बाल सोंके वरण को है वाले करे नाद

प्रतिष्ठा संग्रह जो पत्र २ से
५ तक है प्रतिष्ठा संकल्प हवन

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेद विशारद । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ एवं आचार्य ब्रह्म वरणं कृत्वा नांदीमुख श्राद्धं कुर्यात् ॥
इस प्रकार आचार्य ब्रह्मा का वरण करके फेर नान्दीमुख श्राद्ध का आरंभ करना ॥ नांदी श्राद्ध करके फेर १२ द्वादश ब्राह्मणों को भोजन करा देवे ॥ जो भोजन नहीं करावे तो १२ पत्तल दे देनी फेर अगले दिन नवग्रह मंडप को वणा करके कलश स्थापन करे वा जापक ब्राह्मणों का संकल्पादि करे ॥ प्रथम स्वस्ति वाचनम् ॥ ततः प्रतिज्ञा संकल्प कुर्यात् । अपवित्रेति पठित्वा देशकालौ स्मृत्वा अमुक गोत्रो अमुक शर्मा हं वर्मा हं वा अमोहं अस्या मूर्तेः अमुक देव कला सान्निध्यार्थं आयुः तो तिंजे वा देव कला सान्निध्यार्थं आयु; ईश्वर प्रीतिवा श्री सर्व फल प्राप्ति सरव काम; ईश्वर प्रीति वा श्री बाँके बिहारी शिवादि प्रतिष्ठा कर्म हं:

वरण

[illegible]

यह मंत्र कूपाराम आदि के प्रतिष्ठा मे नारायण गणेश प्र-
तिष्ठा मे बी जपणा ॥ और कूप प्रतिष्ठा मे वरुण का
मंत्र जपणा ॥ आराम प्रतिष्ठा मे इंद्र का मंत्र त्रात
रमिन्द्र० यह जपणा ॥ यह मंत्र दशाङ्ग के मे [illegible]
[illegible] के है ॥ अध्याय ११ मे पत्र १६ पर है ॥ रुद्र गायत्री रु-
द्र प्रतिष्ठा मे जपणी ॥ ओं तत्पुरुषाय विद्महे महा-
देवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥१॥ नाराय-
ण गायत्री नारायण प्रतिष्ठा मे जपणी ॥ ओं ना-
रायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो
विष्णुः प्रचोदयात् ॥२॥ नवग्रहों के मंत्र मंत्र सं-
हिता मे प० १९ पर है ॥ २२ तक ॥ नमोस्तु सर्पेभ्यो० य-
ह मंत्र पत्र २२ पर है ॥ इमं मे वरुण० यह पत्र २२
पर है ॥ रुद्री मे आशुः शिशानो यह ऋचा पत्र १६ कि
ऋचा पत्र १९ पर ॥ मानस्तोके यह पत्र २ पर है ॥
आनन्दुडाभिः यह पत्र ९ पर है ॥ इमापन्त उव स्रुच्चीभ्यः
और आद्या देवा यह पत्र १० पर है ॥ यातेरुद्र शिवा
यह प० ११ पर है ॥ सद्योजातं यह मंत्र पत्र ३२ पर है ॥
भद्रं कर्णेभिः यह मंत्र दशाङ्क मे अ० १ मे प० १० पर है ॥ अग्नि-
मीळे यह मंत्र संहिता मे पत्र ३३ पर है ॥ अग्न आयाहि यह मंत्र

का आरम्भ हुवा है॥ फेर १०९ से परिवार देव
ता पूजन पूर्ण हुती अभिषेक प्रार्थनाग्र
हादि विसर्जन पेहु समक्षुण पत्र १२४ प
र समाप्त हुवा हो गया है॥ इस प्रथम परिच्छेद
समाप्त हुवा ११४ पर श्री याप्पा त्राविधि: श्री
मह०॥ षोडशोपचार पूजन मंत्र पत्र १२१ पर है
॥ पत्र १०८ पर
प्रथम परिच्छेद मेर २८ पर है॥ पत्र १०८ पर
जलहरी मे जो छिद्र रखा है उसमे १५ ऋ
स्रुवर्ण का कर के स्थापन करना लिखे है॥
शोभन नाम छिद्र का है॥ श्री मत्प्र० ११४ प
त्र पर समय विधि समाप्त हो गई है श्री
प्रतिष्ठा मे जपनीय मंत्रों को लिखते हैं॥ द एक मे
पत्र १५ पर वास्तु मंत्र लिखे हैं॥ ॐ वास्तोष्पते प्रतीजानी
ह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवान: यत्त्वे महे प्रति
तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे॥

पूजन का प्रारम्भ होकर के पत्र ३० तक पूजन समाप्त हुवा द्वि
तीय परिच्छेद भी समाप्त हो गया॥ इसी पत्र ३० पर से तृती
य परिच्छेद का प्रारंभ हुवा है इसी ३० पत्र पर तृतीय परि
च्छेद में मंडप स्तंभ तोरण ध्वजापताका इन्द्र का पूजन प्रा
रंभ होगया॥ पत्र ३१ पर सब का इन्द्र का पूजन समाप्त
होकर के तृतीय परिच्छेद भी समाप्त होगया॥ फेर पत्र
३१ से चतुर्थ परिच्छेद का प्रारंभ हुवा तिसमें इसी ३१ पत्र
से कुंड पूजन का॥ और नवग्रहादि पूजन का प्रारं
भ होकर के पत्र ३६ पर कुंड पूजन समाप्त होगया इ
सी ३६ से नवग्रहादि पूजन प्रारंभ होकर पत्र ४३ पर
समाप्त हुवा नवग्रह पूजन॥ फेर इसी ४३ के पत्र पर
से कलश प्रतिष्ठा का प्रारंभ हुवा ४४ पत्र पर कल
श प्रतिष्ठा समाप्त होगई॥ फेर इसी ४४ के पत्र पर
से सर्वतोभद्र मंडल का पूजन प्रारंभ हुवा पत्र ४८
पर समाप्त होगया॥ फेर इसी ४८ के पत्र पर से द्वा
दशलिंगतोभद्र मंडल के पूजन का प्रारंभ होकर
पत्र ५० पर समाप्त हुवा है इसी पत्र ५० पर चतुर्थ परि
च्छेद भी समाप्त होगया है॥ फेर पत्र ५० से पंचम प
रिच्छेद का प्रारंभ हुवा इसी पंचम परिच्छेद में पत्र ५०

५२

सर्वतो
भद्र का
प्रारंभ
की पूज
न की पत्र
४८ से
प्रारंभ
हुवा ४८

अथ प्रतिष्ठा प्रकाशानुसार प्रतिष्ठा विधेः आरम्भः॥
प्रतिष्ठा प्रकाश परिच्छेद प्रथम पत्र ६ तक मंडपादि करण
समाप्त हुवा प्रथम परिच्छेद पत्र ९ पर समाप्त हुवा इसमें आर
म्भ हुवा॥ पश्चात् पत्र ९ पर से द्वितीय परिच्छेद आरम्भ हुवा
तिसमें प्रतिसरा के लग्न राय पति पूजन पश्चात् हुवा [illegible]
न पत्र १५ तक पञ्चपूर्ण हुवा॥ फिर उसी पत्र १५ पर से जो
गौर्यादि षोडश मातृ पूजन है और उसी पत्र पर जो प्रा
[illegible] नान्दी श्राद्ध का आरम्भ हो गया वो
पूजन से पश्चात्॥ [illegible] फिर उसी पत्र १७ पर
आदि पत्र १७ पर समाप्त हुवा॥ फिर पत्र १९ पर
आचार्य ऋत्विजों का वरण आरम्भ हो गया॥ फिर उसी पत्र
आचार्यादि वरण समाप्त हो गया॥ फिर उसी पत्र
१९ से दिग्रक्षण का आरम्भ हुवा है॥
पत्र २० पर समाप्त हो गया॥ फिर उसी पत्र २० से पं
चगव्यकरण की विधिः और पावमान सूक्त का आरं
भ होकर के पत्र २१ पर समाप्त हो गया॥ फिर उसी पत्र
२१ से वास्तुमण्डल का पूजन आरम्भ हुवा पत्र २८॥
के समाप्त हो गया॥ उसी पत्र २८ पर रक्षोघ्नानि और
कुशकण्डिका जी की [illegible] और पावमान [illegible]
[illegible] ग्रहशान्ति होम [illegible]॥ फिर
ग्रहयज्ञ समाप्त हो गये से [illegible] क्षेत्रपाल
पत्र २८ पर से ही चतुःषष्टी योगिनी [illegible]

ये॥ इति धान्याधिवासः॥ यह धान्याधिवास की वि
धि नारद पञ्चरात्र पद्धति के अनुसार वी
लिखि है॥ और प्रतिष्ठा दर्पण ग्रन्थ के अ
नुसार वी लिखे है॥ यह धान्याधिवास की वि० पत्र ६३
पर समाप्त होवा करके॥ फेर पत्र ६३ पर से ही धामे धरा
व लक्षण स्पर्श आवार करके भगवान को धान्याधिवास के
उपर से उठावने अग होवेगे फेर वेदी पर पंचामृ
त और जल से स्नान करा करके आरती भोग दि

23

समझ करके फेर उसी पत्र ६३ से शय्याधिवास कर
देना॥ फेर शय्या के उपर मूर्तियों को स्थापन न क
र के न्यास विधि वी करनी चाहिये यह श
य्याधिवास और न्यास विधिः समझ के य पत्र
१०३ पर समाप्त हो गया है॥ फेर पत्र १०३ से
प्रासादाधिवासन प्रासादे ऽसर्ग यह इन का प्रारम्भ
हुवा फेर १०५ तक यह सभ कुछ समाप्त हुवा
फेर पत्र १०५ से उपरन्तो पत्र १०८ तक विधि
संचार करना प्रारम्भ उसी प० १०८ पर प्राण प्रति

३

यों को उठावना फेर श्रीन सभे व हा कर के मंडलों की प्रदक्षि
णा कराकर वो फेर स्नान वेदी जो प्रथम दक्षिण की तर
फ को है उस पर मूर्तियों को स्थापन कर देना फेर स्ना
न विधि करावनी पत्र ८६ पर प्रथम वेदी स्नानारंभ
हुवा है ॥ पत्र ८८ तक ॥ फेर ८८ से द्वितीय वेदी स्नाना
रंभ हुवा ॥ फेर पत्र ८८ से तृतीय वेदी पर स्नानारंभ
हुवा पत्र ९३ पर तीनों वेदीयों पर स्नान विधि समाप्त
हुई ॥ इति देवस्नपन विधिः समाप्तः ॥ इसी पत्र पर जला
धिवास व वेदी स्नान यह सभ कृत्य समाप्त होगया है ॥
अब पत्र ९३ से दिन में तीन वेदीयों पर स्नान कराकर वो
फेर रात्रि को धान्याधिवास करना ॥ अब धान्याधि
वास की विधि लिखते है ॥ धान्याधिवास को सर्व तो
भद्र मंडपों के उत्तर भाग में उत्तर की तरफ सामग्री
चो धान्य के वाय पार्श्व ति धान्य जो कुछ पत्र मानें वो
धान्य ले वाह उसके १ ढेर लगा वे नेति रखे उपर
नाज रखा फेर मृग छाला वछावती फेर १ सो तां ढेरों प
र पुष्प जगरये लो फेर रशमी वस्त्र १ सातों ढेरों पर जीन
के वधा देना फेर १ दक्षणा उपर उठाय देना यह लि

मूर्तियों का स्थापन कर

धि धान्याधिवास की है अन्न के जो १ ढेर लगा
ये जाते है वोह १ शय्या के रूप मा करी है यह समझना चा

के बीचमे मध्यमे रेते की ३ वेदी करनी वेदीयों के ऊ
र ३ चौकीयां बधावणा चौकीयो पर १ गजा के [?] ता
च चौड़े ३ रेशमी वस्त्र बधावणो सेत मलमल के
चौकीयों के आगाडी ३ पडदे धरणो ॥ फेर चौकीयो के
ऊपर चांदनी बीछतो णां देनी धोर धोर को वस्त्र
से पडदा धोवा कर देना ॥ फेर दो प्रतिमा हो तो २ कुं
डा जल की भर करके चौकीयो के पास रख देनी
१ हो तो १ कुंड रख देनी कुंड के जल मे १ पंचरत्न औ
र ५ पंचपल्लव पंचगव्य वगेरा [?] और इजान प्रका

र की कर देना जलमे ॥ फेर मूर्तीयो के स्थान से वा
जिस स्थान पर मूर्तियां रखी हुई है उस स्थान पर
से धीन समे स्थापन करके बाजे बजावते हुवे या
ग मंडप मे भावना आकरके मूर्तीयों को प्रथम
वेदी पर स्थापन करके फेर मूर्तीयों को जलकी कुं
डो मे स्थापन कर देना ऊपर १ दुशाला कुंडो के ओ
र देना एक दीन रात्रि कुंडो मे स्थापन रखे मूर्तीयों
को इस विधि से जलाधिवास करना ॥ फेर दूसरे
दिन कुंडो के जल मेसे मूर्तीयों को निकाल कर ऊ
त्थापति करजो विद १ यह कह करके बाजा बजा करके मे

सेकुण्डी काउंचन प्रारम्भ किया पत्र ५८ पर समाप्त हो
गया ॥ फेर पत्र ५८ पर से ही दिग्पाल क्षेत्रपाल इन्द्र
कावर्तियों का प्रारंभ किया पत्र ६० पर समाप्त हो गए
वर्तियों का प्रकार ॥ फेर इसी पत्र ६० से द्रूपारोपण
विधि का प्रारंभ किया है ॥ पत्र ६२ पर समाप्त हो गया
इसी पत्र पर पंचम परिच्छेद समाप्त हो गया है ॥ फे
र इसी पत्र ६२ से षष्ठ परिच्छेद का प्रारंभ किया है
इस परिच्छेद में सम्भरण का कारंभ है ॥ पत्र ८३
तक षष्ठ परिच्छेद समाप्त हुवा सम्भरणों का सम्पू
र्ण समाप्त हुवा ॥ पत्र ८४ पर सप्तम परिच्छेद का प्रारंभ
किया है इस परिच्छेद में जलाधिवास का प्रारंभ किया
25 पत्र ८६ पर जलाधिवास समाप्त हुवा फेर इसी
पत्र ८६ से ३ वेदीयों पर स्नान विधि का प्रारंभ होकर
के फेर पत्र ९३ पर देवस्नपन विधि समाप्त होगया
है ॥ देवस्नपन विधिः ॥ १०० पृष्ठ पर समाप्त हो गया
प्रथम जलाधिवास की विधि लिखते हैं ॥ प्रथम सर्व
मण्डप में उत्तर से पूर्व की तरफ चतुरस्त्र [illegible] को ३ वेदी
[illegible] तैयार कर उन ४ चार के लिये चार कलश चार
[illegible] तीयर वेदीयों के ४ चारों कोणों पर स्थापन कर एवं